कुल प्रश्नों की संख्या : 17
Total No. of Questions: 17

कुल पृष्ठों की संख्या : 04
Total No. of Pages: 04

324

विषय : आशुलिपि हिन्दी (सिद्धान्त)

Subject: SHORTHAND HINDI (PRINCIPLES)

समय : 03 घण्टे
Time: 03 Hours

पूर्णांक : 100
Maximum Marks: 100

निर्देश :– सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के उत्तर सुवाच्य एवं सुस्पष्ट हों। जहाँ आवश्यक हो वहाँ आशुलिपि की आउटलाइन बनाइये।

समयः1 घण्टा 30मिनट **पूर्णांक : 30**

प्र.1 हिन्दी भाषा में कुल कितने व्यंजन हैं? (1)

प्र.2 रेखाओं को मिलाते समय पेंसिल को उठाया जाता है या नहीं? (1)

प्र.3 लघु स्वर तथा दीर्घ स्वर के तीन–तीन उदाहरण दीजिए। (1)

प्र.4 शब्द चिन्हों का प्रयोग किस प्रकार के शब्दों के लिये किया जाता है? (1)

प्र.5 शब्द चिन्ह 'की' और 'के' में क्या अन्तर है? (1)

प्र.6 अन्तिम 'स' व्यंजन के पश्चात स्वर आने पर 'स' कैसे लिखा जाता है? (1)

प्र.7 आरम्भ में स्वर आने के बाद क्या 'स' वृत का प्रयोग किया जाता है? (1)

प्र.8 क्या वाक्यांशों में कभी–कभी स्वर संकेत लगाना आवश्यक है? (1)

प्र.9 वाक्यांश बनाते समय पहला रेखा शब्द कहाँ पर लिखा जाता है? (1)

प्र.10 प्रारंभिक हुक किन–किन रेखाओं पर नहीं लगाया जाता? (1)

प्र.11 आशुलिपि में रेखाओं की लम्बाई कितनी होती है? इन्हे आपस में मिलाने में समान लम्बाई न होने पर क्या दुष्परिणाम होते है? (2)

प्र.12 रेखाक्षरों को रेखागणितीय आधार पर कितनी दिशाओं में लिखा जाता है? उनके नाम भी लिखिए। (2)

प्र.13 आशुलिपि में द्विध्वनिक स्वर किसे कहते हैं, एवं यह कितने होते हैं? इन्हे कैसे लिखा जाता है? (2)

प्र.14 ऊपर और नीचे लिखे जाने वाले 'ल' का प्रयोग उदाहरण सहित समझाइए। (2)

प्र.15 निम्नलिखित में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिएः– (4)

(अ) शब्द का प्रारम्भ व्यंजन से हो तो ....रेखा का प्रयोग किया जाता है।

(ब) शब्द के अन्त में स्वर हो तो...रेखा लिखी जाती है।

(स) शब्द के आरम्भ में स्वर आने पर ....रेखा का प्रयोग किया जाता है।

(द) एक जैसी रेखाओं में .... संकेत करना आवश्यक होता है।

प्र.16 आशुलिपि में रेखाओं को आधा (अर्धाक्षर) करने के क्या नियम हैं? समझाइए। (4)

प्र.17 निम्नलिखित शब्दों को आशुलिपि में लिखिएः– (कोई चार) (4)

(1) टेलीफोन

(2) स्मरण

(3) परामर्श

(4) कलाकार

(5) महाराज

(6) राजभाषा

डिक्टेशनः 5 मिनट | पूर्णांकः 40

अनुवाद एवं टंकण अवधिः 40 मिनट

प्रोफेसर मोहनलाल जी ने कालेज यूनियन की सभा में स्त्री स्वतन्त्रता का प्रस्ताव उपस्थित करते हुए कहा – सभापति महोदय तथा भ्रातगण और बहिनो जैसा पहले कहा जा चुका है स्त्री स्वतन्त्रता बड़ा महत्वपूर्ण विषय है। स्त्री और पुरूष समाज की ईकाई के दो आवश्यक अंग हैं। कोई भी समाज या देश तभी सुदृढ़ और सुसंगठित हो सकता है जब ये दोनो अंग एक समान उन्नत हों फिर हमारी समझ में नही आता कि हम अपने एक हिस्से को कमजोर रखकर अपनी सम्पूर्ण उन्नति कैसे कर सकते हैं। इतने वर्ष के अनुभव और अध्ययन के बाद तो मुझे यह निश्चय हो चुका है कि जब तक हमारी माताएं और बहिन पुरूषों की तरह सुशिक्षित और सवस्थ न होंगी तब तक समाज तथा देश की यथार्थ उन्नति न हो सकेगी। हमें यह सुनकर दुख होता है कि कुछ पुराने विचार के लोगों को केवल लड़कों की शिक्षा की आवश्यकता मालूम होती है। किन्तु लड़कियों की शिक्षा कतई जरूरी नहीं मालूम होती है। परन्तु जैसा कि हम उपर कह चुके हैं कि स्त्री और पुरूष समाज के दो आवश्यक अंग हैं एक ही गाड़ी के दो पहिए हैं। अतः हमे इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि समाज रूपी गाड़ी को सुचारू रूप से चलाने के लिए दोनो पहियों को एक सा ठीक रखना परम आवश्यक है। यह हो ही कैसे सकता है कि एक चाक टूटा हो फिर भी गाड़ी ठीक चले। यदि यह मान भी लिया जाए कि स्त्रियाँ पुरूष की अपेक्षा कमजोर रहती हैं परन्तु साथ ही साथ यह भी कहा जा सकता है कि यदि उन्हे यथोचित शिक्षा मिले तो पुरूषों की कठिनाइयों में सच्ची सहायता कर सकती हैं एवं बड़ी आर्थिक गुत्थियाँ हल कर सकती हैं।

———————×————————

डिक्टेशनः 5 मिनट **पूर्णांकः 30**

अनुवाद एवं टंकण अवधिः 40 मिनट

भोपाल

ता. 27/4/2017

महाशय जी,

मैंने आपके 'संसार चक्र' नाम की पुस्तक का विज्ञापन आप के 'लीडर' अखबार में देखा है। यदि ये पुस्तक आप 200₹ में दे सकें तो कम से कम 5 पुस्तक तुरन्त ही वी.पी. करके पोस्ट ऑफिस द्वारा भेजने की कृपा करें। वी.पी. आते ही छुड़ा ली जावेगी।

भवदीय

राम प्रसाद